SKU शोध संचार
(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

लोकतंत्र में स्वतंत्र पत्रकारिता की भूमिका और महत्व

आलोक अग्रवाल
पत्रकारिता एवं जनसंचार
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

स्वतंत्र पत्रकारिता एक स्वस्थ लोकतंत्र की आधारशिला होती है। यह नागरिकों को सूचित करने, विचारों की अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करने, सरकारों और संस्थाओं की जवाबदेही तय करने तथा समाज में पारदर्शिता और न्याय को सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। लोकतंत्र में सत्ता का नियंत्रण जनता के हाथों में होता है और यह नियंत्रण तभी प्रभावी हो सकता है जब जनता को समुचित, सत्य और निष्पक्ष जानकारी मिले। इसी जानकारी को स्वतंत्र पत्रकारिता समाज के समक्ष प्रस्तुत करती है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ प्रेस की स्वतंत्रता पर लगातार अंकुश लगाए जा रहे हैं, यह विषय और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है।

यह शोध पत्र स्वतंत्र पत्रकारिता की भूमिका का व्यापक विश्लेषण करता है। इसमें यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार स्वतंत्र पत्रकारिता न केवल सूचना का माध्यम है, बल्कि एक लोकतांत्रिक समाज में विचार विमर्श, सार्वजनिक संवाद और जनसत्ता के सशक्तिकरण का साधन भी है। साथ ही यह भी विवेचना की गई है कि मीडिया पर नियंत्रण, व्यवसायीकरण, फेक न्यूज़ और राजनीतिक दबाव जैसे तत्व लोकतंत्र की आत्मा पर कैसे चोट करते हैं। शोधपत्र का उद्देश्य पत्रकारिता की स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता फैलाना और इसके संरक्षण के उपायों पर प्रकाश डालना है।

बीज शब्द

स्वतंत्र पत्रकारिता, लोकतंत्र, मीडिया स्वतंत्रता, जनतंत्र, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सत्ता की जवाबदेही, सूचना का अधिकार।

अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

प्रस्तावना

लोकतंत्र शब्द स्वयं में ही जनसत्ता की भावना को समाहित करता है, जहाँ जनता सर्वोच्च होती है और उसकी राय से शासन का संचालन होता है। स्वतंत्र पत्रकारिता इन अधिकारों की रक्षा करते हुए सत्ता और जनसत्ता के बीच सेतु का कार्य करती है। जब पत्रकारिता स्वतंत्र होती है तो वह सत्ता के गलत प्रयोग पर प्रश्न उठा सकती है, समाज के कमजोर वर्गों की आवाज़ बन सकती है और पारदर्शिता को बढ़ावा देती है। परंतु क्या यह राय केवल चुनावों तक सीमित है? नहीं। यह राय तब तक सार्थक नहीं हो सकती जब तक नागरिकों को अपने आस-पास हो रही घटनाओं की जानकारी न हो, उन्हें सत्ता की नीतियों, उनके दुष्प्रभावों, योजनाओं और उनके क्रियान्वयन की वास्तविकता का भान न हो। इस जानकारी का स्रोत बनती है – पत्रकारिता।

पत्रकारिता केवल समाचार देने तक सीमित नहीं है, यह जनमानस को विचारशील बनाती है, प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति को जन्म देती है और सत्ता से पारदर्शिता की माँग करती है। जब पत्रकारिता स्वतंत्र होती है, तब वह निष्पक्ष रूप से समाज के विविध पक्षों को सामने लाती है। वह जनमत को प्रभावित करती है, सरकार की विफलताओं को उजागर करती है, अल्पसंख्यकों और शोषितों की आवाज़ बनती है, और लोकतंत्र की आत्मा – "जनता की भागीदारी" – को सशक्त करती है। किन्तु जब पत्रकारिता पर किसी प्रकार का दबाव, भय, या स्वार्थ हावी हो जाता है, तब वह लोकतंत्र के लिए खतरे की घंटी बन जाती है। इसलिए यह आवश्यक है कि पत्रकारिता पूर्णतः स्वतंत्र, निष्पक्ष और निर्भीक बनी रहे। इस शोध पत्र में इसी विषय को केंद्र में रखते हुए स्वतंत्र पत्रकारिता के विभिन्न पहलुओं, उसकी भूमिका, चुनौतियों तथा संभावित समाधानों की विवेचना की गई है।

शोध विधि

इस शोध में गुणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें विभिन्न प्रामाणिक लेख, रिपोर्ट्स, मीडिया अध्ययन, केस स्टडीज़ और संविधानिक प्रावधानों का विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त कुछ महत्त्वपूर्ण उदाहरणों और मीडिया रिपोर्टों के माध्यम से स्वतंत्र पत्रकारिता की भूमिका को स्पष्ट किया गया है।

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

शोध विस्तार

1. लोकतंत्र और पत्रकारिता का परस्पर संबंध - लोकतंत्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि नागरिक कितने सचेत, जानकारीयुक्त और जागरूक हैं। पत्रकारिता लोकतांत्रिक प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने के लिए सूचना, विश्लेषण, बहस और सार्वजनिक संवाद की सुविधा प्रदान करती है। यह 'लोकतंत्र का चौथा स्तंभ' कहे जाने का सम्मान इसी लिए पाता है।

2. ऐतिहासिक दृष्टिकोण - भारत में स्वतंत्रता संग्राम के समय पत्रकारिता ने जन जागरण में अहम भूमिका निभाई। बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे पत्रकारों ने पत्रकारिता को जन आंदोलन का रूप दिया। स्वतंत्रता के बाद भी प्रेस ने लोकतंत्र को जीवंत बनाए रखने में योगदान दिया।

3. संवैधानिक संरक्षण - भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(1) (a) सभी नागरिकों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देता है, जो स्वतंत्र पत्रकारिता की नींव है। हालाँकि प्रेस की स्वतंत्रता का स्पष्ट उल्लेख नहीं है, लेकिन इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अभिन्न भाग माना गया है।

4. वर्तमान चुनौतियाँ - पत्रकार एवं पत्रकारिता पर वर्तमान में कुछ निम्नलिखित चुनौतिंयॉ हैं

1. मीडिया पर राजनीतिक और कॉर्पोरेट नियंत्रण
2. फेक न्यूज़ और ट्रोल संस्कृति
3. पत्रकारों की सुरक्षा पर खतरा
4. सरकारी दबाव और सेंसरशिप
5. पत्रकारिता का व्यवसायीकरण और टीआरपी प्रतिस्पर्धा

5. स्वतंत्र पत्रकारिता की प्रमुख भूमिकाएँ - पत्रकार सत्ता के निर्णयों और कार्यप्रणाली की जांच करते हैं और भ्रष्टाचार को उजागर करते हैं। मीडिया की रिपोर्टिंग समाज की सोच और दृष्टिकोण को आकार देती है। यह समाज के वंचित वर्गों को मंच देता है, जो सामान्यतः अनसुने

SKU SHODH SANCHAR

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

रह जाते हैं। जनता को शासन, नीतियों, अंतरराष्ट्रीय घटनाओं, न्यायिक कार्यवाही और सामाजिक मुद्दों पर अद्यतन जानकारी देता है।

6. स्वतंत्र पत्रकारिता के उदाहरण - रवीश कुमार जैसे पत्रकारों का निष्पक्ष रिपोर्टिंग तथा द वायर, स्क्रॉल, अल्ट न्यूज जैसे प्लेटफार्म का तथ्यों पर आधारित रिपोर्टिंग करना एवं बीबीसी और NDTV की रिपोर्ट्स जो सत्ता के विरुद्ध प्रश्न उठाती हैं।

7. वर्तमान में स्वतंत्र पत्रकारिता पर संकट - सरकारें मीडिया संस्थानों पर दबाव बनाती हैं जिससे उनकी आलोचना सीमित होती है। बड़े कॉर्पोरेट समूह मीडिया हाउसों के मालिक बन चुके हैं जिससे निष्पक्षता पर सवाल खड़े होते हैं। सामाजिक मीडिया के माध्यम से असत्य सूचना का प्रवाह लोकतंत्र को भ्रमित करता है। पत्रकारों पर हमले, धमकियाँ और मुकदमे बढ़ रहे हैं जिससे स्वतंत्र पत्रकारिता खतरे में है।

8. स्वतंत्र पत्रकारिता की रक्षा हेतु निम्नलिखित उपाय किए जाना आवश्यक है जैसे -

1. मीडिया नियामक संस्था को स्वतंत्र बनाया जाए।
2. पत्रकारों की सुरक्षा हेतु विशेष कानून बने।
3. मीडिया स्वामित्व की पारदर्शिता सुनिश्चित की जाए।
4. मीडिया साक्षरता का प्रसार किया जाए ताकि जनता सत्य और असत्य के बीच फर्क कर सके।

निष्कर्ष

स्वतंत्र पत्रकारिता केवल सूचना का साधन नहीं, बल्कि लोकतंत्र का प्रहरी है। यह सत्ता को उसकी सीमाओं का अहसास कराती है, जनता की भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करती है तथा एक विवेकशील और सचेत समाज के निर्माण में सहायक होती है। यदि पत्रकारिता निष्पक्ष नहीं होगी तो लोकतंत्र केवल दिखावा बन जाएगा, जिसमें न तो जनता की आवाज़ होगी और न ही सत्ता की जवाबदेही।

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

आज जब प्रेस की स्वतंत्रता पर वैश्विक स्तर पर खतरे मंडरा रहे हैं, भारत जैसे विशाल लोकतंत्र को पत्रकारों की सुरक्षा और स्वायत्तता सुनिश्चित करनी होगी। पत्रकारिता की स्वतंत्रता केवल पत्रकारों का अधिकार नहीं, अपितु प्रत्येक नागरिक की जानकारी पाने की स्वतंत्रता से जुड़ी है। इसलिए स्वतंत्र पत्रकारिता की रक्षा करना लोकतंत्र को जीवित रखने का एकमात्र उपाय है।

संदर्भ

1. भारतीय संविधान, अनुच्छेद 19(1) (a)
2. प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया की रिपोर्ट्स
3. UNESCO Report on World Press Freedom (2023)
4. कुमार रवीश – "द फ्री वॉयस: ऑन डेमोक्रेसी, कल्चर और द नेशन"
5. वेबसाइट: The Wire, Scroll.in, Alt News
6. भारत में प्रेस की स्वतंत्रता पर आधारित मीडिया स्टडीज (IIMC और JNU द्वारा प्रकाशित)
7. रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर्स – Press Freedom Index 2024